सोलर चरखे से संवर रही महिलाओं की जिंदगी

ग्रीन एनर्जी से कपड़ा बुनने व चिकनकारी से आई आत्मनिर्भरता

अक्षय कुमार

लखनऊ। कभी खुद रोजगार के लिए भटक रहे अभिषेक पाठक आज न सिर्फ अपना खुद का एक ब्रांड सफेदाबाद, लखनऊ-बाराबंकी सीमा पर चला रहे हैं, बल्कि सोलर चरखे से ग्रामीण महिलाओं को रोजगार देकर उनकी जिंदगी संवार रहे हैं। अभिषेक के साथ तीन-चार जिलों की लगभग पांच सौ से अधिक महिलाएं कपड़े बनाने व चिकनकारी का काम कर रही हैं। इससे उनकी आर्थिक स्थिति बेहतर हुई है।

मूल रूप से सुल्तानपुर निवासी अभिषेक ने 12वीं करने के बाद निफ्ट दिल्ली से टेक्सटाइल डिजाइनिंग का कोर्स किया। इसके बाद उन्होंने अलग-अलग कंपनियों के साथ जुड़कर काम किया, लेकिन इसमें उन्हें बहुत सफलता नहीं मिली। उन्होंने प्रगति मैदान में आयोजित एक कार्यक्रम में सोलर चरखे का काम देखा। हाथ से सूत कातने पर काफी समय लगता और उत्पाद भी अपेक्षाकृत कम निकलता था। वहीं सोलर चरखे से बेहतर उत्पादन हो रहा था।

सफेदाबाद में अभिषेक ने सोलर चरखे व सोलर लूम से 500 महिलाओं को दिया रोजगार

यहीं से उन्होंने ग्रीन एनर्जी से बने कपड़े तैयार करने पर काम शुरू किया। एमएसएमई की ओर से उन्हें इसका एक पायलट प्रोजेक्ट बिहार में मिला था। साथ ही यूपी में बच्चों की यूनिफॉर्म बनाने के लिए भी काम मिला था। इसी बीच उन्होंने खुद का फैशन ब्रांड शुरू कर दिया और सोलर चरखे व सोलर लूम से कपड़े तैयार करना शुरू किया। कोविड के समय लॉकडाउन होने पर काफी लोग उनके पास काम के लिए आने लगे। इसमें महिलाओं की संख्या काफी थी।

इसके बाद धीरे-धीरे काम बढ़ता गया और 10 सोलर चरखे, छह सोलर लूम के साथ ही 120 सिलाई मशीन से उनके यहां काम हो रहा है। इसमें लखनऊ, बाराबंकी, सीतापुर व हरदोई की लगभग 500 से अधिक महिलाएं जुड़ी हैं। अभिषेक पाठक ने कहा कि अन्य माध्यम से कपड़े तैयार करने में काफी प्रदूषण होता है। यही वजह है कि हमने सोलर चरखे व लूम पर काम शुरू किया है। वहीं महिलाओं को उनके घर-गांव के पास ही काम मिल रहा है। क्योंकि उनके हाथ में हुनर तो बहुत है, लेकिन उसका बेहतर प्रयोग नहीं हो पा रहा है।

नए शोध भी कर रहे हैं, बनाएंगे आत्मनिर्भर

अभिषेक ने कहा कि हाथ से आठ घंटे में 200 ग्राम सूत काता जाता है जबकि सोलर चरखे से आठ घंटे में लगभग दो किलो धागा बनता है। वे केले के वेस्ट पर शोध कर रहे हैं, इसका फाइबर के रूप में प्रयोग किया जा सकता है। उन्होंने कहा कि बनारसी साड़ी में प्रयोग होने वाला काफी रॉ उत्पाद बाहर से आता है। जबकि हम इसे अपने यहां तैयार कर सकते हैं। हम साड़ी का धागा यहां तैयार कर आत्मनिर्भर बन सकते हैं।

आईईटी सोलर कपड़े के लिए कर रह हैंड होल्डिंग

इंस्टीट्यूट ऑफ इंजीनियरिंग एंड टेक्नोलॉजी (आईईटी) लखनऊ के निदेशक प्रो. विनीत कंसल ने बताया कि संस्थान का नवयुग नवाचार फाउंडेशन अभिषेक की हैंड होल्डिंग कर रहा है। सोलर चरखे के बेहतर प्रयोग व इनके काम को बढ़ावा देने के लिए इसकी वेबसाइट डेवलप करने, इनकी मार्केटिंग, निवेश के लिए प्रायोजक, मेंटरशिप आदि का काम कर रहा है। साथ ही स्टार्टअप फंड के लिए आवेदन भी किया गया है।